स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

जब हम अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे, तो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए अलग-अलग प्रकार के पुरस्कार तैयार किए हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि कुछ पुरस्कार सार्वजनिक होंगे—जो सभी को दिखाई देंगे—और कुछ निजी होंगे, जिन्हें केवल वही व्यक्ति और परमेश्वर ही जानेंगे।

इसे समझने के लिए एक शादी के उदाहरण पर विचार करें। दुल्हन और दूल्हे को अक्सर दो तरह के उपहार मिलते हैं। कुछ उपहार खुलेआम दिए जाते हैं—जैसे फर्नीचर, बर्तन या जमीन। ये सभी देख सकते हैं। लेकिन कुछ उपहार गुप्त रूप से मिलते हैं—सीलबंद लिफाफे, बॉक्स या बैग में। केवल जोड़े को पता होता है कि उसमें क्या है: शायद एक चेक, फोन, घड़ी या कार की चाबियाँ।

अगर दूल्हा बाद में उस कार को चलाता है, तो लोग सोच सकते हैं कि उसने इसे खरीदने के लिए कड़ी मेहनत की। लेकिन असल में, यह एक गुप्त उपहार था—जिसे केवल देने वाला और पाने वाला ही जानता था।

इसी तरह, जब हम स्वर्ग में पहुंचेंगे, परमेश्वर हमें हमारे विश्वास और निष्ठा के लिए सार्वजनिक पुरस्कार देंगे (2 कुरिन्थियों 5:10)। लेकिन साथ ही, वे हमें व्यक्तिगत और छिपे हुए पुरस्कार भी देंगे—जैसे एक नया नाम—जो केवल हमें और परमेश्वर को ज्ञात होगा।

स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

प्रकाशितवाक्य 2:17
“जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा क्या कहती है। जो विजयी होगा, उसे छिपा मन्ना खाने के लिए दूँगा। और उसे एक सफेद
पत्थर दूँगा, जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, जिसे उसे पाने के सिवा कोई नहीं जानता।”

यह पद दिखाता है कि परमेश्वर प्रत्येक विजयी को एक नया नाम देंगे, जो सफेद पत्थर पर अंकित होगा। यह केवल प्रतीकात्मक नहीं है—यह नई पहचान, नया उद्देश्य और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध का प्रतीक है, जिसे कोई और पूरी तरह नहीं समझ सकता।

हमारे प्रभु यीशु को भी पाप और मृत्यु पर उनकी विजय के बाद पिता द्वारा एक अद्वितीय नाम दिया गया:

प्रकाशितवाक्य 19:12
“उसकी आँखें आग की लौ के समान थीं, और उसके सिर पर कई मुकुट
थे। उस पर एक नाम लिखा था, जिसे वह स्वयं सिवाय किसी के नहीं जानता था।”

स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

नाम का महत्व

शास्त्रों में, किसी व्यक्ति का नाम केवल पहचान नहीं देता—यह भाग्य, अधिकार, चरित्र और बुलाहट का प्रतीक होता है।

उदाहरण:

अब्राहम: पहले अब्राम, बाद में अब्राहम (“कई राष्ट्रों का पिता”)—इस नाम परिवर्तन ने अनगिनत वंशजों का वचन पूरा किया (उत्पत्ति 17:5)। आज, सभी विश्वासियों को मसीह में विश्वास के माध्यम से अब्राहम की आध्यात्मिक संतान माना जाता है (गलातियों 3:7, 29)।
सारा: पहले सारा, बाद में वचनित पुत्र इसहाक की माता बनी (उत्पत्ति 17:15–16)। याकूब: अब्राहम के साथ संघर्ष के बाद उसे इस्राएल नाम मिला। इससे आध्यात्मिक मोड़ आया और उसके बच्चे इस्राएल की बारह जातियों के पिता बने (उत्पत्ति 32:28)।
प्रेरित शिमोन और साउल: क्रमशः पतरस और पौलुस बने, और तभी उन्होंने अपनी पूर्ण प्रेरितीय शक्ति और मिशन में कदम रखा (यूहन्ना 1:42; प्रेरितों के काम 13:9)।

इन सभी मामलों में नया नाम नई आध्यात्मिक पहचान और उद्देश्य का प्रतीक था।

इसी प्रकार, स्वर्ग में, परमेश्वर उन लोगों को नए नाम देंगे, जिन्होंने विश्वास और धैर्य के साथ जीवन की परीक्षाओं को पार किया। ये नाम उनकी मसीह में वास्तविक पहचान, अनंत पुरस्कार और स्वर्गीय अधिकार को दर्शाएंगे।

स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

अन्य लोग इन नामों के प्रभाव और परिणाम देख सकते हैं, लेकिन नाम स्वयं व्यक्तिगत और गुप्त रहेंगे—केवल परमेश्वर और उसे पाने वाले के बीच। यह पिता के साथ गहरी व्यक्तिगत घनिष्ठता का प्रतीक है।

क्या आप नया नाम नहीं चाहते?

यह एक अमूल्य वचन है। लेकिन हम ऐसे विजयी कैसे बन सकते हैं, जो इस पुरस्कार के योग्य हों?

प्रकाशितवाक्य 2:16
“पश्चाताप करो, अन्यथा मैं शीघ्र आकर अपने मुख की तलवार से
उन पर लड़ूँगा।”

विजयी बनने के लिए हमें करना होगा:

1. अपने पापों से पूरी तरह पश्चाताप करना।
2. अपने जीवन को पूरी तरह मसीह को सौंपना।
3. इस संसार में तीर्थयात्री और अजनबी की तरह जीना, सांसारिक सुखों से न चिपकना (इब्रानियों 11:13)।
4. प्रभु की सेवा ईमानदारी और निष्ठा से करना, जिस अनुग्रह और बुलाहट को उन्होंने हमें दिया है (रोमियों 12:6–8; 1 पतरस 4:10)।

स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

क्या आपने अपना जीवन यीशु को दिया है?

यदि नहीं, तो समझ लें कि समय कम है। हर नया दिन हमें अंत के करीब लाता है। बहुत जल्द, रैप्चर (अपनापन) होगा (1 थेस्सलुनीकियों 4:16–17) और अनुग्रह का द्वार बंद हो जाएगा। उसके बाद, पश्चाताप करने या राज्य में प्रवेश करने का कोई अवसर नहीं होगा।

सभोपदेशक 11:3
“यदि बादल वर्षा से भरे हों, तो वे पृथ्वी पर बरसेंगे; और यदि
कोई वृक्ष दक्षिण या उत्तर में गिरता है, तो वहीं वह पड़ा रहेगा।”

यानी, जीवन समाप्त होने पर आपका अनंत भाग्य निश्चित हो जाएगा। इसके बाद दूसरा अवसर नहीं होगा।

आज ही निर्णय लें

अपना जीवन मसीह को दें। उनके साथ चलें। उनकी सेवा करें। और केवल अनंत जीवन ही नहीं, बल्कि नया नाम प्राप्त करने की खुशी की प्रतीक्षा करें—जो आपकी विजय, प्रेम और अनंत पहचान का व्यक्तिगत प्रतीक है, जिसे आपके सृजनकर्ता ने दिया।

स्वर्ग में संतों के गुप्त पुरस्कार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

प्रभु शीघ्र आ रहे हैं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp